Vol 6 Issue 9 October 2016

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Mr. Dikonda Govardhan Krushanahari
Professor and Researcher ,
Rayat shikshan sanstha's, Rajarshi Chhatrapati Shahu College, Kolhapur.

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

ISSN: 2230-7850 Impact Factor :4.1625(UIF) Volume - 6 | Issue - 9 | October - 2016

Indian Streams Research Journal

मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद में मानवीय मूल्य शिक्षा का स्वरूप, एवं शिक्षा वस्तु का लोकव्यापीकरण

कु. हिना चावड़ा[1] , डॉ सुरेन्द्र पाठक[2]

[1] अध्यापिका–मूल्य शिक्षा एवं मनोवैज्ञानिक परामर्शदात्री , विभाग–मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान रायपुर, छ.ग. भारत.

[2] विभागाध्यक्ष–चेतना विकास मूल्य शिक्षा, आई.ए.एस.ई. मान्य विश्वविद्यालय गांधी विद्या मंदिर सरदारशहर रा.ज., भारत.

सारांश

अस्तित्व में सभी इकाईयॉ एक दूसरों के पूरक है। केवल मानव का अस्तित्व पूरकता को प्रमाणित करता हुआ नजर नहीं आ रहा है। जैसे– स्वयं के भीतर मानव अव्यवस्थित है फलतः ईष्या द्वेष जलन, क्रोध, भय, अहंकार पूर्वक केवल अव्यवस्था फैलाना इसलिए मानव कार्य–व्यवहार पूर्वक दूसरों के साथ भी अपने स्वभाव के साथ अव्यवस्थित है शिकायत, नाराजगी, अपना पराया का दिवाल इत्यादि के साथ दुखी पिड़ित रहना और मूल में चाहना सुखी होने की है नासमझी व भ्रम वश गलती वश अव्यवस्थित है। मूल में चाहना के रूप में मानव भी व्यवस्था में जीना चाहता है। मूल रूप से गलती करना नहीं चाहता। अनजाने में नासमझी में गलती हो रही हैं। इसलिए शिक्षा व्यवस्था ऐसी हो जो मानव को ऐसी समझ व ज्ञान दे कि मानव स्वयं को समझ पाये संपूर्ण को समझ पाये और संपूर्ण के साथ पूरक होकर जी पाये। मानव यदि सुखी समाधानीत होकर जीता है यही मानव के चेतना का विकास है। मानव का अध्ययन ही मानवीय शिक्षा है। मानव जाति के लिए स्वयं को समझने का, संपूर्ण को समझने का सरल आसान तरीका मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद में दिया गया है।

शब्द कुंजी – मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद, मानवीय शिक्षा, शिक्षा की विषय वस्तु, जीवन ज्ञान, अस्तित्वदर्शन ज्ञान, मानवीयतापूर्ण आचरण ज्ञान एवं ज्ञान, विज्ञान, विवेक।

1. मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्वाद

मानव का इतिहास हम विगत कई युगो वर्षो से सुन रहे है। मानव के विगत इतिहास को देखे तो यह पता चलता है कि मानव विगत से वर्तमान तक अपने अस्तित्व की तलाश में है, मानव का इस धरती में होने का प्रयोजन क्या है? मानव की रचना किसने की, क्यों की? और सही जीवन जीने का तरीका क्या है? जिससे यह ज्ञात होने पर मानव सुख–शांति पूर्वक जी सकें। मानव द्वारा किये गये जितने भी कार्य गतिविधियॉ है वह सब सुनने में, पढ़ने में आती है कि मानव मूल रूप में स्वयं सुखी होना चाहता था एवं दूसरों को भी सुख ही देना चाहता था यही सुनने में आया। भ्रम व नासमझी से स्वयं ही स्वयं से एवं दूसरों से दुखी हो जाता है। नासमझी में रूप, धन, पद, बल, अहंकार में जीना। यही समस्या हमें आज भी देखने को मिल रही है। यदि हम अतित के इतिहास के प्रयासों की समीक्षा करें तो पूर्व इतिहास का सम्मान करते हुए यही कहना बनता है कि मानव जाति अपनी कल्पनाशिलता के बल पर बहुत कुछ किया है लेकिन फल परिणाम से पता चलता है कि मानव जाति आज भी धरती में पूर्णतः सुखी समाधानित नहीं हो पाये है।

विगत में हम प्राकृतिक भय से पिढ़ित रहें तो आज भी हम प्राकृतिक भय से पिढ़ित है। विगत में हम मानव के अनिश्चित आचरण से पिढ़ीत हुए है तो आज भी हम मानव की अनिश्चित आचरण से पिढ़ीत है। आदर्शवाद में ईश्वर देवी–देवता रहस्य में रहें उनके बाद भी हमारी उनके प्रति आस्थाऐं कम नहीं हुई। ईश्वर रहस्य रहें, आस्थाऐं रहस्य में रहीं तब भी इसकी सत्यता की जॉच नहीं की जा सकी। बेहतर सुविधा होने से हर दिन सुख पूर्वक जीने का उदाहरण नहीं दिखता। तब यह सवाल मन में उठता है कि मानव के जीने का उद्देश्य है, एवं सुख पूर्वक जीने की विधि क्या है? वह विधि भी शिक्षा व्यवस्था में देने की आवश्कता है।

मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्वाद के अध्ययन से पता चलता है कि जो अध्यात्वाद अर्थात आदर्शवाद एवं विज्ञान युग में प्रतिपादित नहीं हुआ वह मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्व में प्रतिपादित हुआ। मानव सुख चाहता है, सुख हर दिन हर पल चाहत है। इसी सुख की तलाश में भक्ति विरक्ती पूर्वक ईश्वर की खोज हुई की ईश्वर मिल जायेंगे तो हमारा जीवन सफल हो जायेगा हम सब सुखी हो जायेंगे लेकिन ईश्वर मिले नहीं, तब मानव ने मान लिया मेरी ही भक्ति विरक्ती में कोई कमी रहीं होगी। उसके बाद विज्ञानयुग से आश्वास मिला की सुविधाओं का भोग करों धन का संग्रह करों इससे भय दूर होगा एवं उससे हमारी सभी समस्याओ का अंत हो जायेगा। इसका भी उदाहरण आज के

समाज में देखनें को मिल रहा है। अधिकतम धन से मानव धन, पद, बल से संपन्न तो हो गया लेकिन फिर भी इंसान सुखी नहीं हो पाया क्यों?

चुँकिं मूल समस्या यहाँ पर मानव की है, जीना मानव को है, समझना मानव को है, सुखी–दुखी मानव ही होता है। इसलिए आवश्यकता है मानव पहले स्वयं को समझे तभी वह स्वयं से जुड़ी हुई सभी समस्याओं के कारण को जान पायेगा और उसे ठीक कर पायेगा। एक तरफ आदर्शवाद (आध्यत्वाद) रहस्य में रहा तो दूसरी तरफ भौतिकवाद संग्रह भोग की ओर ले गया। फल परिणाम में धन भय, मान भय, पद भय, प्राण भय एवं ईश्वर के प्रति आस्था (आस्था = बिना जाने मान लेना) ही हाथ आया। इसलिए मानव यदि ईश्वर के रहस्य को जानने के स्थान पर एवं सुविधा, धन का भोग के स्थान पर स्वयं को जानने का प्रयास करें तो ज्यादा अच्छा रहेगा। क्योंकि समस्या मानव की स्वयं को है समस्या का समाधान चाहने वाला मानव ही है। मानव स्वयं के अस्तित्व को समझे बीना अन्य के अस्तित्व को समझ नहीं पायेगा। जिससे संपूर्ण के साथ सहअस्तित्व संबंध समझ में नहीं आयेगा।

2. मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद में मानवीय मूल्य शिक्षा का स्वरूप

मूल्य शिक्षा की विषय वस्तु विविध पाठ्यक्रमों में वर्तमान शिक्षा में दिये जा रहे विषयों में केवल कौशल पक्ष को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रमों की रचना हुई है उसमें अगर चैतन्य पक्ष को सही समझ उपलब्ध कराने के उद्देश्य से पाठ्यक्रमों में पुनः संशोधन यदि करना हो तो वह निम्न होगा–

1.विज्ञान के साथ चैतन्य पक्ष का अध्ययन।
2.मनोविज्ञान में संस्कार पक्ष का अध्ययन।
3.दर्शनशास्त्र के साथ क्रिया पक्ष का अध्ययन।
4.अर्थशास्त्र के साथ प्राकृतिक एवं वैकृतिक ऐश्वर्य की सदुपयोगात्मक एवं सुरक्षात्मक नीति पक्ष का अध्ययन।
5.राज्यनीति शास्त्र के मानवीयता के संरक्षणात्मक तथा संवर्धनात्मक नीति पक्ष का अध्ययन।
6.समाज शास्त्र के साथ मानवीय संस्कृति व सभ्यता पक्ष का अध्ययन।
7.भूगोल और इतिहास के साथ मानव तथा मानवीयता का अध्ययन।
8.साहित्य के तात्विक पक्ष का अध्ययन अनिवार्य है क्योंकि इसके बिना इसकी पूर्णता सिद्ध नहीं होती।

इतिहास में न मौलिक घटनाओं व प्रेरणाओं को वरीयता के रूप में अध्ययन करने की व्यवस्था रहेगी जो मानवीयतापूर्ण जीवन के लिए प्रेरणादायी होगी।

3.संपूर्ण शिक्षा वस्तु

ब्रम्हाण्ड में एक अरब से भी ज्यादा आकाश गंगाएँ है। आकाश गंगाओं के अन्तर्गत अनगिनत तारे, ग्रह तथा अन्य आकाशीय पिण्ड हैं। संपूर्ण ग्रह अस्तित्व में सह अस्तित्व के साथ है। संपूर्ण साथ–साथ है। अनन्त में हमारें चारों तरफ विस्तारित क्षेत्र ब्रम्हाण्ड कहलाता है। जिसमें से एक धरती भी है।

बम्हाण्ड में अगर हम सौर प्रणाली (सोलर सिस्टम) को देखे तो यह समझ में आता है कि सभी नौ ग्रह एक दूसरों से एक निश्चित अच्छी दूरी में अपने–अपने स्थान पर एक निश्चित आचरण के साथ क्रियाशील है, गतिमान है। वे सभी ग्रह स्वयं में निश्चित आचरण के साथ व्यस्थित है और परस्परता में एवं समग्रता में भी व्यवस्थित है। और समग्र व्यवस्था में उनकी भागीदारी प्रमाणित है। जैसे– धरती का सूरज के चारों तरफ घुमना, स्वयं में घुर्णन गति करना। चंद्रमा का धरती के चारों तरफ चक्कर लगाना इस तरह सभी ग्रह की एक निश्चित भूमिका है, जिसमें सभी क्रियाशील है, गतिमान है। धरती में चारों अवस्थाओं का होना, ऋतु परिवर्तन का होना, धरती पर धुप और छॉव का दिखना इत्यादि वास्तविकताऐं हमें देखने को मिलती है।

इस तरह सभी ग्रह अपने निश्चित आचरण के साथ प्रमाणित नजर आ रहे है। यदि हम कल्पना करें कि यह सभी नौ ग्रह एक दिन के लिए अपने निश्चित आचरण को प्रमाणित करते हुए नजर नहीं आ रहे है तब क्या होगा ?

जैसे– 1. धरती क्रियाशिल है गतिमान है एक दिन के लिए वह सूरज के चारों तरफ चक्कर लगाना बंद कर दे तब क्या होगा? या धरती अपनी जगह से हट कर कही दूर चली जाये तब क्या होगा ? संपूर्ण ब्रम्हाण्ड का स्वरूप ही बदल जायेगा। शायद दूसरे ग्रह से टकराकर खत्म हो जाये, कुछ भी हो सकता है।

अतः समझ में आता है कि धरती या अन्य सभी ग्रहों के निश्चित आचरण के कारण उनका कार्य गतिविधि निश्चित होने के कारण वे स्वयं व्यवस्थित है और समग्र व्यवस्था में भागीदार है। यह ब्रम्हाण्ड में हमें दिखाई देता है कि सभी अणु, परमाणु का एक निश्चित आचरण के साथ होना हमें समझ में आता है जब संपूर्ण ब्रम्हाण्ड में एक निश्चित क्रियाशिलता एवं गतिमानता नजर आ रही है तो इसी ब्रम्हाण्ड में एक ग्रहों का समूह सौर प्रणाली है जिसमें एक ग्रह दूसरे ग्रह से एक निश्चित अच्छी दूरी गतिमानता के साथ दिखाई देती है। इसी सौर प्रणाली में एक ग्रह धरती है धरती स्वयं में निश्चित आचरण के साथ नजर आ रही है। धरती में पदार्थ जगत, प्राण जगत और जीव जगत भी अपने निश्चित आचरण के साथ हमें नजर आ रही है उसमें से केवल मानव ही निश्चित आचरण के साथ नजर नहीं आ रहा। अर्थात ज्ञानावस्था की इकाई मानव इस ब्रम्हाण्ड में अनिश्चित आचरण के साथ है।

सौर प्रणाली में सभी ग्रहों के निश्चित आचरण होने से यह स्पष्ट होता है कि मानव का निश्चित आचरण के साथ प्रमाणित होना संभव है। इसलिए शिक्षा की विषय वस्तु ऐसा हो जिसमें शिक्षा के माध्यम से मानव को निश्चित आचरण होने की शिक्षा (समझ) दी जा सकें।

धरती = संपूर्ण प्रकृति	
निश्चित आचरण के साथ प्रमाणित	टनिश्चित आचरण के साथ
मिट्टी–पत्थर,पानी, हवा, पेड़–पौधे, पशु–पक्षी, जीव–जानवर	ज्ञानावस्था में मानव
शिक्षा के माध्यम से मानव भी निश्चित आचरण पूर्वक जीना प्रमाणित कर सकता है।	

निश्चित आचरण पूर्वक मानव का जीना कैसा होगा

1. मानव का आहार निश्चित होगा।
2. मानव कार्य प्रकृति के संतुलन चक्र को ध्यान में रखकर कर पाने में मानसिक रूप से सक्षम होगा।
3. प्रकृति संतुलन के लिए प्राप्त विकल्प पर काम करना हो पायेगा।
4. मानव का स्वभाव में धीरता, वीरता, उदारता, दया पूर्वक होगा।
5. मानव स्व पति/पत्नि संबंध में जीयेगा। स्वधन का उपयोग करेगा।
6. मानव का जीना स्वयं में विश्वास पूर्वक होगा।
7. दूसरों का सम्मान कर पाना एवं व्यवहार में सामाजिक होगा।
8. मानवीय स्वभाव में जीना होगा।
9. स्वयं में विश्वास, परिवार में समृद्धि के भाव में जीना होगा।
10. समाज में परस्पर विश्वास का वातावरण होगा। अर्थात भय मुक्त समाज होगा।
11. प्रकृति में संतुलन एवं चारों अवस्थाओं में परस्पर पूरकता प्रमाणित होगा।

अध्ययन करने की संपूर्ण वस्तु अस्तित्व ही है।
अध्ययन में केवल तीन वस्तु है–

जीवन ज्ञान, अस्तित्व दर्शन ज्ञान, मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान

- अध्ययन करने वाली वस्तु मनुष्य है।
- जीवन नित्य है, जीवन के लिए शरीर एक साधन है ।

ज्ञान, विज्ञान, विवेक

अ). ज्ञान – अस्तित्व एवं ब्रम्हाण्ड में जो कुछ भी है उसके बारे पूरा जानना ज्ञान है। इस ब्रम्हाण्ड में धरती है, यह धरती क्यों है? इसकी रचना कैसे हुई? इस धरती के आस–पास जितने भी ग्रह गोल, तारे है उनके बारे में जानना। इस धरती में पेड़ पौधे, मिट्टी, पत्थर, हवा, पानी, जीव–जानवर इत्यादि एवं मानव के बारे में जानना ज्ञान है। इन सभी आपस में क्या संबंध है। संपूर्ण किसी नियम से चालीत है उन नियमों को जानना। धरती के प्रत्येक अवस्थाओं का आपस में क्या अंतरसंबंध है उन नियमों जानना, मानना, पहचानन एवं उसे प्रमाणित करना। प्रत्येक इकाई का अस्तित्व कैसे–क्यों है से प्रारंभ होकर कितना और कबतक है का पता होने से जानना पुरा होता है। इस तरह इस धरती से लेकर संपूर्ण ब्रम्हाण्ड तक संपूर्ण के अस्तित्व के बारे पूरा जानना ही ज्ञान है। जिसमें मानव–मानव संबंध एवं मानव एवं प्रकृति संबंध एवं संपूर्ण अस्तित्व संबंध को समझना ही ज्ञान है।

• *जीवन ज्ञान* –मानव रूप में मेरा क्या अस्तित्व है। स्वयं एवं शरीर के अस्तित्व का ज्ञान।

1 मैं हूँ।	1. मेरा शरीर है।
2 मैं जीना चाहता हूँ।	2. शरीर को साधन की तरह प्रयोग करता हूँ।
3 मैं निरंतर सुख पूर्वक जीना चाहता हूँ।	3. शरीर के पोषण, संरक्षण, सदुपयोग के लिए सुविधा की आवश्यकता है।
4 स्वयं से लेकर संपूर्ण अस्तित्व की व्यवस्था को समझना, व्यवस्था में जीना यह मेरा कार्यक्रम है।	4. सुविधा का उत्पादन, संरक्षण, सदुपयोग मेरे कार्यक्रम का एक भाग है।

•*अस्तित्व दर्शन ज्ञान* – मानव रूप में अभी मेरा अस्तित्व मुझे कहॉ दिखाई देता है ? मेरा अस्तित्व मुझे इस धरती में दिखाई देता है तब यह धरती में क्या–क्या है?, क्यों है एवं मेरा उनसे संबंध क्या है? जैसे जीव जानवर से मानव का संबंध, पेड़ पौधों से, मिट्टी पत्थर हवा पानी से क्या संबंध है यह जानना एवं यह संबंध में संतुलन एवं न्याय प्रमाणित कैसे होगा उसे जानना। संपूर्ण अस्तित्व का होना अलग–अलग है या साथ–साथ है। प्रकृति के किन प्राकृतिक स्त्रोत पर मानव का अधिकार है एवं अधिकार नहीं है यह जानना एवं वैसा प्रमाणित करना जिससे प्रकृति संतुलित रहें। यह सभी समझ प्राथमिक शिक्षा से विश्वविद्यालय तक पाठ्क्रम में लाने की आवश्यकता है।

• *मानवीयतापूर्ण आचरण ज्ञान* – मानव के अस्तित्व का ज्ञान होने पर यह समझ में आता है कि मानव का जीना प्रकृति एवं मानव के साथ होता है। मानव का मानव से संबंध कैसा होगा। मानव का प्रकृति के साथ संबंध कैसा होगा। प्रकृति में पेड़–पौधे, जीव–जानवर, मिट्टी, पत्थर, हवा, पानी के साथ संबंध कैसा होगा। धरती के प्रत्येक मानव का स्वभाव एक होगा या अलग–अलग होगा। मानव का स्वभाव जानवरों जैसा होगा या उनसे भिन्न होगा। मानव का आहार कैसा होगा। मानव के स्वयं, परिवार, समाज में जीने का स्वरूप कैसा होगा सभी अपनी मनमर्जी से जियेंगे या कोई सार्वभौम मापदण्ड होगा

जिससे सभी स्व नियंत्रित हो पाये। अभी वर्तमान में हम परिवार, समाज में कई विकृतियॉ एवं समस्याऐं देख ही रहें है उसके स्थायी समाधान के लिए कार्य व्यवहार में एकरूपता के लिए क्या कोई ऐसा सार्वभौम नियम या कोई सूत्र है तो वह है मानवीयतापूर्ण आचरण ज्ञान। मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्वाद में मानवीयतापूर्ण आचरण का सार्वभौम स्वरूप दिया गया है। जिसमें मानवीय आचरण मूल्य, नीति, चरित्र के रूप में है। यह सभी समझ होना मानवीयता के लिए आवश्यक है। यह सभी समझ प्राथमिक शिक्षा से विश्वविद्यालय तक पाठ्क्रम में लाने की आवश्यकता है। तभी मानव–मानव के साथ शिकायत मुक्त संबंध के साथ जी पायेगा एवं प्रकृति एवं मानव के साथ न्याय कर पायेगा।

ब). विज्ञान– कालवादी, क्रियावादी, निर्णयवादी। लक्ष्य तक पहुचने के लिए दिशा प्राप्त हो जाये इसका नाम विज्ञान है। मानवीय लक्ष्य के लिए दिशा निर्धारण–कालवादी, क्रियावादी, निर्णयवादी क्रिया (चित्रण, विश्लेषण, चयन आदि क्रिया) योजना, कार्यक्रम बनाना, मूल्यांकन करना।

स) विवेक– जीवन का अमरत्व, शरीर का नश्वरत्व, व्यवहार का नियम। जीवन के अमरत्व का ज्ञान, शरीर के नश्वरतव का ज्ञान, व्यवहार के नियम का ज्ञान। फलतः मानव लक्ष्य की स्पष्टता–समाधान, समृद्धि, अभय, सह अस्तित्व के रूप में। (मेरे जीने के लिए क्या सही और क्या गलत है)

व्यवहार के नियम–

- बौद्धिक नियम (असंग्रह स्नेह, विद्या, सरलता, अभय)
- सामाजिक नियम (स्वधन,स्वनारी/स्वपुरूष एवं दयापूर्ण कार्य व्यवहार)
- प्राकृतिक नियम (पूरकता, उदात्तीकरण, विकास, त्व सहित व्यवस्था)

5. 'मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद' का लोकव्यापीकरण

मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्वाद आधारित शिक्षा को जीवन विद्या शिविरों के नाम से सात दिवसिय आवासिय शिविरों के माध्यम से दिया जा रहा है जिसमें स्वयं में व्यवस्था, परिवार में व्यवस्था, समाज में व्यवस्था में एवं प्रकृति में व्यवस्था संबंधी समझ से परिचय कराया जाता है। जो व्यक्ति संपूर्ण को जानने के लिए जिज्ञासु रहता है उसके लिए इसके पश्चात छः माह एवं एक वर्षिय अध्ययन कक्षाओं की व्यवस्था की जाती है। जिसमें मध्यस्थ दर्शन के सभी वांग्मयों का अध्ययन कराया जाता है। इसमें से भावी मूल्य शिक्षा अध्यापको की तैयारी भी कि जाती है।

वर्तमान में जीवन विद्या शिविर 'मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद' के प्रकाश में चेतना विकास मूल्य शिक्षा पृथक पाठ्यक्रम के रूप में आज कई तकनिकी महाविद्यालय सहित विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालयों में यह एक अनिवार्य विषय के रूप में विद्यार्थियों को निम्न स्थानों पर दिया जा रहा है–

1. छत्तीसगढ़ में मूल्य शिक्षा अध्ययन केन्द्रः

मानवीय शिक्षा शोध संस्थान अभ्युदय संस्थान अछोटी दुर्ग एवं अभिभावक विद्यालय वी.आई.पी. माना रोड़ रायपुर, सार्वभौम मानवीय मूल्य शिक्षा केन्द्र एन.आई.टी. रायपुर, कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय रायपुर, छत्तीसगढ़ स्वामी विवेकानन्द तकनीकी विश्वविद्यालय भिलाई छ.ग., एस.सी.ई.आर.टी. शंकर नगर रायपुर ।

2. आई.आई.आई.टी. हैदराबाद।
3.मानवीय शिक्षा संस्कार कानपुर, एच.बी.टी. आई. कानपुर, आई.आई.टी. कानपुर।
4.आई.आई.टी. दिल्ली।
5.काशी हिन्दू विश्वविद्यालय या बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी।
6.यू.पी. टेक्नीकल यूनिवर्सिटी के 630 महाविद्यालयों में पंजाब टेक्नीकल यूनिवर्सिटी।
7.चेतना विकास मूल्य शिक्षा–आई.ए.एस.ई. डीमड यूनिवर्सिटी सरदारशहर राजस्थान।
8.महाराष्ट्र में सोमईया विद्याविहार मुंबई एवं पुणे।
9.दिव्य पथ संस्थान अमरकण्टक म.प्र., मानव चेतना विकास केन्द्र इंदौर मध्यप्रदेश।
10.पश्चिमी उत्तरप्रदेश में जीवन विद्या प्रतिष्ठान बिजनौर।
11.अन्य स्थानों पर –बैंगलोर, मसूरी, कनाडा, नेपाल, गुजरात, भूटान, महाराष्ट्र..... इत्यादि स्थानों पर दिया जा रहा हैं।
12. एस.सी.ई.आर.टी. दिल्ली।

दिल्ली के उच्च शिक्षा विभाग में कार्यरत 40 उच्च शिक्षा अधिकरियों की मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्वाद आधारित आवासिय जीवन विद्या शिविर 2–8 अप्रैल 2015 में कक्षाऐं अभ्युदय संस्थान लगायी। उसके बाद इसे दिल्ली शिक्षा में अनिवार्य पाठ्यक्रम के रूप में लागू करने के लिए दिल्ली के एस.सी.ई.आर.टी. के अंतर्गत पदस्त समस्त अधिकारियों एवं शिक्षकों के लिए मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्वाद आधारित जीवन विद्या शिविरों का आयोजन करना एवं भागलेना अनिवार्य कर दिया। जिसमें पूरे दिल्ली राज्य के 30 हजार से भी ज्यादा शिक्षकों एवं अधिकारियों के लिए दिल्ली में त्यागराज स्टेडियम में जीवन विद्या शिविर का आयोजन 2016 में किया गया। जिसमें प्रतिदिन दो से तीन हजार तक प्रतिभागीयों ने भाग लिया। आवासिय शिविरों के लिए दिल्ली से 50 किलोमिटर दूर हापूड़ में स्थित हापूड़ अभ्युदय संस्थान में सात दिन की जीवन विद्या कक्षाऐं आयोजित कि गयी एवं की जा रही है। वर्तमान शिक्षा मंत्री दिल्ली द्वारा मूल्य शिक्षा को शिक्षा व्यवस्था में भावी युवा पीढ़ी के लिए अनिवार्य विषय के रूप में लाने की योजना है। जिससे यही बच्चें अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद एक समझदार, ईमानदार, जिम्मेदार नागरीक के रूप में खड़े हो पाये। एवं स्वच्छ सुन्दर सुखी परिवार, भय मुक्त समाज, मानव कल्याण आधारित राष्ट्र निर्माण के लिए आगे पाये। ऐसा प्रयास पुरे भारत भर में अन्य कई स्थानों पर किया जा रहा है।

संदर्भ ग्रंथ–

1.नागराज ए.1998, समाधानात्मक भौतिकवाद, जीवन विद्या प्रकाशन, अमरकण्टक म.प्र.
2.नागराज ए. 2003, मानव व्यवहार दर्शन, जीवन विद्या प्रकाशन, अमरकण्टक म.प्र.
3.नागराज ए. 2009, अनुभवात्मक अध्यात्वाद, जीवन विद्या प्रकाशन, अमरकण्टक म.प्र.
4.सत्य वाए. (1999), सह–अस्तित्व। उर्जा अध्ययन केन्द्र, आई.आई. टी. दिल्ली। परिवार मानव पत्रिका, सह अस्तित्व पूर्ण विश्व मानव परिवार, परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था का सन्देश वाहक, प्रकाशक जीवन विद्या प्रतिष्ठान, गोविन्दपुर, बिजनौर, उ.प्र.। अंक 6, पेज नं. 15–22.
5.बागड़िया जी. 2005, मानवीय प्रतिभा, मानवीय शिक्षा संस्कार संस्थान, कानपुर उ0प्र0, परिवार मानव पत्रिका, प्रकाशक अभ्युदय संस्थान अछोटी, दुर्ग छ.ग.। वर्ष 11, अंक–6,7 , पेज नं. 8–10.
6.नागराज ए. 2002, व्यवहारात्मक जनवाद, जीवन विद्या प्रकाशन, अमरकण्टक म.प्र.
7.नई दिल्ली में प्रकाशित 8 अप्रैल 2015 A http://indianexpress.com/article/cities/delhi/sisodia-takes-his-education-team-for-value-education/#sthash.m00J3JYR.dpuf

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org